सीखना और सिखाना | डिस्लेक्सिक बच्चों के साथ अनुभव

माला आर नटराजन

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया कक्षा में शिक्षकों के साथ अनुभवों और होमवर्क व घर पर सीखने के अनुभवों की एक सतत प्रक्रिया है। शैक्षणिक वर्ष में होने वाले विराम आमतौर पर पहले से निर्धारित होने के साथ ही सामान्यत: कुछ ही अवधि के लिए होते हैं। यह अवधि — कई बार एक मज़ेदार तरीक़े से — कक्षा में सिखाई गई चीज़ों को पुख़्ता करने और यह सुनिश्चित करने के अनूठे अवसर प्रदान करती है कि स्कूल खुलने के बाद बच्चे आसानी-से और निर्बाध रूप से शैक्षिक सत्रों को जारी रख सकें। हालाँकि महामारी के कारण होने वाला यह विराम न सिर्फ़ अनियोजित था, बल्कि इसका कोई अन्त होता नहीं दिख रहा था। समूची शिक्षा पर इस महामारी का महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है और डिस्लेक्सिया वाले बच्चों पर तो और भी ज़्यादा।

शुरुआत से, डिस्लेक्सिया वाले बच्चे के सीखने-सिखाने की प्रक्रियाएँ 'मैं जिस तरीक़े से सीखता हूँ, मुझे वैसे सिखाया जाए' के दर्शन पर आधारित हैं। मल्टी-मॉडल तरीक़े का उपयोग करके सीखने की प्रक्रियाओं को लाभकारी बनाने के साथ-साथ मज़ेदार बनाकर अच्छे-से किया जाता है। मल्टी-मॉडल पद्धति में बच्चा श्रवण (audio), दृश्य (visual), गतिपरक (kinaesthetic) और स्पर्श (tactile) चैनलों के ज़रिए इनपुट प्राप्त करता है। इसमें या तो सभी चैनलों या बच्चे के सीखने की शैली के अनुरूप उपयुक्त चैनलों के एक संयोजन का इस्तेमाल किया जाता है। इस दृष्टिकोण में यह बात निहित है कि शिक्षण-विधियाँ कभी भी सबके लिए एक समान नहीं होती हैं।

जब महामारी का प्रकोप हुआ तो मद्रास डिस्लेक्सिया एसोसिएशन (MDA) के विशेष शिक्षक एकदम शुरुआती दौर में ही उपचारात्मक सत्रों (remedial session) को नए तरीक़ों से करने के लिए सक्रिय हो गए। इन सत्रों में प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के अलावा डिस्लेक्सिया वाले बच्चों के लिए अपनाए जाने वाले सबसे उपयुक्त तरीक़ों पर बने रहने का यथासम्भव प्रयास किया गया। आफ़्टर-स्कूल रीमिडियल सेंटर की प्रमुख श्रीमती सावित्री कृष्णन के शब्दों में कहें तो, "सरलता, रचनात्मकता और अनुकूलन समय की माँग है।" विशेष शिक्षकों पर भरोसा जताते हुए उन्होंने कहा "वे हमेशा अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देते हैं और इससे फ़र्क़ पड़ता है और वे हर ज़रूरतमन्द बच्चे के पास पहुँचते हैं।"

डिस्लेक्सिया वाले बच्चों के लिए हमारे पूर्णकालिक उपचारात्मक शिक्षण केन्द्र अनन्या लर्निंग एंड रिसर्च सेंटर की प्रधानाध्यापिका श्रीमती गौरी रामनाथन ने भी ऐसी ही बात सामने रखी। उन्होंने कई नए तरीक़ों के बारे में भी बताया जो विशेष शिक्षकों द्वारा कुछ विशिष्ट मुद्दों से निपटने के लिए काम में लिए गए हैं। उदाहरण के लिए, उन्हें डिस्लेक्सिया से पीड़ित बच्चों को सिखाने के दौरान ध्यान में कमी और बैठने की सहनशीलता (sitting tolerance) का सामना करना पड़ा।

एक उदाहरण में, एक बार एक बच्चे को कैमरे के फ्रेम के भीतर ही कुछ खेलकूद, शारीरिक व्यायाम करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इसने विशेष शिक्षक को बच्चे को प्रोत्साहित करने और यह सुनिश्चित करने में सक्षम बनाया कि बच्चा निर्धारित समय पर कक्षा में वापिस आ जाए। कभी-कभी शिक्षक और बच्चा दोनों मज़ेदार ऑनलाइन खेल खेलते ताकि बच्चे को थोड़ा आराम मिल सके और फिर बाद में शिक्षक दोबारा बच्चे का ध्यान पाठ की ओर आकर्षित कर सके।

हालाँकि सभी विशेष शिक्षकों ने महसूस किया कि मौखिक प्रोत्साहन बच्चे के अन्दर बढ़ती हुई हताशा को कम करने के लिए धीरे-से पीठ थपथपाने या एक उत्साहजनक स्पर्श की भरपाई नहीं कर सकता है।

महामारी की शुरुआत में विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों की ऑनलाइन सत्रों के बारे में कुछ नया करने की कोशिश के उत्साह से लेकर सन्देह तक अलग-अलग राय और अपेक्षाएँ थीं। प्रौद्योगिकी, कनेक्टिविटी के मुद्दों और बिना काग़ज़ और बिना पाठ (text) के साथ काम करने जैसे अचानक आए परिवर्तनों ने भी बाधाएँ उत्पन्न कीं। शिक्षकों और बच्चों दोनों ने जल्दी ही नए मानकों के अनुसार ख़ुद को ढाल लिया। इससे शिक्षकों व अभिभावकों को राहत मिली कि उपचारात्मक सत्र बिना किसी विराम के जारी रह सकते हैं। डिस्लेक्सिया वाले बच्चों के सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं के सुदृढ़ीकरण को सुनिश्चित करने के लिए निरन्तरता एक महत्त्वपूर्ण आधार रहा है। अभिभावकों के अनुभव, उनकी भागीदारी और प्रतिक्रियाएँ अलग-अलग प्रकार की रही हैं। अगर विशेष शिक्षक पर भरोसा नहीं रखा जाता तो महामारी के समय में इतनी जल्दी वापिस

जुड़ना सम्भव नहीं होता। हालाँकि कुछ ऐसी घटनाएँ भी हुईं जिनमें कुछ अति उत्साही अभिभावक बच्चों का गृहकार्य ख़ुद ही कर देते थे। कभी-कभी तो कैमरे के सामने ऑनलाइन कक्षा में भी वे बच्चों का कार्य कर देते थे! कुछ अभिभावक ऐसे थे जो इस छोटी अवधि में अपने बच्चे के कौशल स्तरों में महत्त्वपूर्ण सुधारों की उम्मीद रखते थे। विशेष और वरिष्ठ शिक्षक, दोनों ने इन पहलुओं पर अभिभावकों से बातचीत की। कुछ अवसर ऐसे भी आए जब विशेष शिक्षकों को कक्षा के दौरान अभिभावकों के घरों में होने वाली गतिविधियों के कारण ध्यान बँट जाने की बात को उनके ज़ेहन में लाना पड़ा। (बेशक इनमें से कुछ पल हँसी लेकर आते थे और कुंठित पलों को दूर भगाने में मदद करते थे)। कुछ मामलों में अभिभावकों के मन में बैठी कोविड सम्बन्धी चिन्ता बच्चों के मन में भी घर कर गई थी।

कई अभिभावकों के लिए यह ऑनलाइन सत्र आँख खोलने वाले थे : उन्होंने अपने बच्चों को कक्षा के दौरान निर्धारित छोटे-छोटे लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयास और संघर्ष करते हुए देखा। इससे उन्हें इससे यह एहसास हुआ कि उनका बच्चा न तो आलसी है, और न ही मूर्ख है। डिस्लेक्सिक बच्चों के बारे में यह दो आम धारणाएँ हैं।

महामारी के फैलने से पहले शैक्षिक प्रौद्योगिकी (EdTech) एक गूढ़ शब्द था। लेकिन इन कुछ महीनों में विशेष शिक्षक प्रभावी शिक्षण के लिए विभिन्न सॉफ्टवेयर, कम्प्यूटर, वेब कैमरा और अन्य उपकरणों को अपने आप ही इस्तेमाल में लेने लगे। पाठ-योजना में इनका एकीकरण अब बड़े ही सहज ढंग से हो जाता है। श्रीमती सुरेखा कहती हैं, "मैं शिक्षण-प्रक्रियाओं को समृद्ध करने के लिए ई-क्लासरूम सॉफ्टवेयर की सुविधाओं को आज़माना चाहती हूँ।" गौरी रामनाथन ने वास्तविक कक्षाओं के फिर से शुरू होने पर उपचारात्मक शिक्षण में EdTech के एकीकरण को जारी रखने के लिए उत्सुकता व्यक्त की। उन दोनों ने माना कि विशेष शिक्षक समूह के सदस्य आपस में घनिष्ठता से जुड़े हैं और लगातार अपने अनुभवों और सीखों को एक-दूसरे से साझा करते हैं। हालाँकि कुछ ऐसे पहलू हैं, जिनका समाधान नहीं किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, लेखन के यांत्रिक पहलू, बच्चों के समग्र विकास के लिए पाठ्येतर गतिविधियाँ,योग, नृत्य और संगीत के सत्र और बच्चों के लिए परामर्श सत्र।

व्यावसायिक चिकित्सा (Occupational Therapy – OT) के लिए ऑनलाइन सत्र बच्चों की व्यक्तिगत ज़रूरतों के आधार पर योजनाबद्ध किए गए थे। यह सूक्ष्म क्रियात्मक और स्थूल क्रियात्मक कौशलों (Fine and Gross motor skills) ध्यान देने और प्रबन्ध कार्यों में आ रही कठिनाइयों से निपटने में बच्चे की मदद करने में सक्षम थे। फिर भी सभी बच्चे एकमत होकर स्कूल और कक्षाओं के माहौल को याद करते थे। बहु-बुद्धिमत्ता सिद्धान्त (Multiple Intelligences) के इर्द-गिर्द बुनी गई मौज-मस्ती से भरी गतिविधियों में हिस्सा लेना उन्हें बहुत याद आता है। गतिविधियों का ऑनलाइन संस्करण अच्छा था, लेकिन वास्तविक कक्षाओं में होने वाली गतिविधियाँ बेहतर थीं! हालाँकि अभिभावक और विशेष शिक्षक इस बारे में चिन्तित हैं कि स्कूल खुलने के बाद बच्चे कैसे तालमेल बिठाएँगे।

प्रबन्धन का परिप्रेक्ष्य परिचालन मुद्दों के आस-पास केन्द्रित था। महामारी की शुरुआत के बाद से आमने-सामने बैठकर आकलन करना सम्भव नहीं था। इस कारण कम प्रवेश हुए हैं और इसका मतलब है कि कम बच्चों को पूर्णकालिक उपचार का लाभ मिला है। आमदनी पर भी इसका असर पड़ा है। यह सुनिश्चित करने के लिए ऑनलाइन जागरूकता कार्यक्रम और प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए जा रहे हैं कि हम डिस्लेक्सिया के प्रति संवेदनशील समाज को सक्षम बनाने के अपने मिशन की दिशा में प्रयासरत रहें। मद्रास डिस्लेक्सिया एसोसिएशन को उम्मीद है कि इस महामारी से प्राप्त सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के सकारात्मक परिणामों को आगे बढ़ाया जाएगा और जो भी कमियाँ रह गई हैं उन्हें वास्तविक कक्षा सत्रों के फिर से शुरू होने पर दूर किया जाएगा।

आभार

लेखिका इस लेख में इनपुट देने के लिए सावित्री कृष्णन, गौरी रामनाथन और हरिनी रामानुजन का शुक्रिया अदा करती हैं।

माला आर नटराजन विशेष शिक्षक हैं और डिस्लेक्सिया से पीड़ित बच्चों को पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित हैं। वर्तमान में वे मद्रास डिस्लेक्सिया एसोसिएशन में काम कर रही हैं। उन्होंने कॉर्पोरेट क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी में काम किया है और एक उत्साही शिक्षक के रूप में इन परियोजनाओं को व्यावहारिक अन्तर्दृष्टि प्रदान करने में मदद की है। उनसे **mala.m@mdachennai.com** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** सात्विका ओहरी